Course – BA Education Hons, part 1.
paper – 1 (Philosophical & Sociological Foundation of Education)
Topic – Meaning & Scope of philosophy.
Prepared by – Dr. Sangeeta Kumari

इकाई 3 : दर्शन का अर्थ एवं क्षेत्र
Unit 3 : Meaning & scope of philosophy

3.1 दर्शन का अर्थ (Meaning of philosophy)

'दर्शन' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'दृश्' धातु से हुई है। दृश् धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाने से 'दर्शन' बनता है। दृश्यते अनेन इति दर्शनं, अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाए वह 'दर्शन' है। उपनिषदों में 'सत्यान्वेषण' की बात कही गई है जिसके लिए प्रज्ञाचक्षुओं की आवश्यकता होती है। इस अर्थ में सत्य का प्रत्यक्षीकरण करना ही दर्शन है। दर्शन की प्रकृति क्रियात्मक है।

दर्शन को अंग्रेजी भाषा में 'फिलॉसफी' (Philosophy) कहते हैं जिसकी उत्पत्ति यूनानी भाषा के दो शब्दों से हुई है – 'फिलॉस' (Philos) और 'सोफिया' (sophia). 'फिलॉस' का अर्थ प्रेम (love) और सोफिया का अर्थ है ज्ञान (wisdom). इन दोनों शब्दों से अर्थ निकलता है – ज्ञान के प्रति प्रेम।

3.2 दर्शन की परिभाषाएँ (Definition of Philosophy)

फिक्टे के अनुसार,
"दर्शन ज्ञान का विज्ञान है।"

कांट के अनुसार,
"दर्शन विज्ञान तथा ज्ञान की समीक्षा है।"

डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार,
"दर्शन यथार्थ के स्वरूप का तार्किक विवेचन है।"

Scanned with CamScanner

हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार,
"दर्शन विज्ञानों का संश्लेषण है अथवा एक सार्वभौमिक विज्ञान है।"

दर्शन का क्षेत्र (Scope of philosophy):-
दर्शन को मुख्य रूप से तीन भागों में बाँटते हैं:-
(1) तत्वमीमांसा (Metaphysics)
(2) ज्ञान मीमांसा (Epistemology)
(3) मूल्य मीमांसा (Axiology)

(1) तत्वमीमांसा -
तत्वमीमांसा के लिए अंग्रेजी शब्द 'मेटा फिजिक्स' प्रयुक्त होता है जिसका तात्पर्य है, 'भौतिक संसार से परे की चीज'। अर्थात् तत्व मीमांसा का विषय है- ब्रह्माण्ड क्या है? ब्रह्माण्ड के नियम क्या है? ईश्वर क्या है? आत्मा है या नहीं? मनुष्य के सामने सबसे बड़ा प्रश्न है कि क्या वह जिस जगत में रहता है वह वास्तविक है? इस प्रश्न का उत्तर दर्शन से ही मिल सकता है और दर्शन की जिस शाखा से इसका निराकरण होता है उसे तत्व मीमांसा कहते हैं।

(2) ज्ञान मीमांसा:-
ज्ञान मीमांसा के अन्तर्गत ज्ञान की विभिन्न शाखाओं एवं ज्ञान के प्रकार पर विचार किया जाता है। साथ ही इस दर्शन में इस पर भी विचार होता है 'सत्यज्ञान की खोज किस माध्यम से संभव है, कैसे हम उस लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं?

(3) मूल्य मीमांसा:-
मूल्य मीमांसा के दो क्षेत्र है- नीति मीमांसा एवं सौन्दर्य मीमांसा। नीति मीमांसा के अन्तर्गत

Scanned with CamScanner

मनुष्य के जीवन, आचरण तथा उसके कार्यों का विश्लेषण किया जाता है। अच्छा क्या है? बुरा किसे कहेंगे? आदि मानदण्डों के निर्माण पर विचार होता है। सौन्दर्य मीमांसा के अन्तर्गत सौन्दर्य के विभिन्न मानदण्डों पर विचार होता है।

8.3 शिक्षा और दर्शन में सम्बन्ध (Relation between Philosophy and Education)

दर्शन जीवन का एक दृष्टिकोण है और शिक्षा स्वयं जीवन है। दर्शन और शिक्षा में घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षा का आधार दर्शन है। दर्शन के सिद्धान्तों पर शिक्षा गतिमान होती है। इस प्रकार से यदि दर्शन सिद्धान्त है तो शिक्षा व्यवहार। दर्शन और शिक्षा के सम्बन्धों को निम्नलिखित बिन्दुओं से अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है :—

(1) एक दूसरे के पूरक के रूप में :—

दर्शन और शिक्षा को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है वे एक दूसरे के रूप में कार्य करते हैं। एक बिना दूसरा रास्ता भटक सकता है। यदि शिक्षा किसी रास्ते पर चलना चाहती है तो उसे दर्शन सक्षम नेतृत्व प्रदान करता है।

(2) शिक्षा दर्शन का गत्यात्मक पहलू :—

शिक्षा दर्शन का गत्यात्मक पक्ष है। दर्शन सत्य मार्ग की खोज करता है तो शिक्षा उस पर चलती है। यह सत्य के अन्वेषण पर समय और परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। जिससे चिन्तन या विचार में परिवर्तन होते हैं और ये परिवर्तन शिक्षा में भी परिवर्तन कर देते हैं। दर्शन यदि सिद्धान्त है तो शिक्षा उसका व्यवहारिक रूप। एक विचार करता है तो दूसरा व्यवहार करता है।

Scanned with CamScanner

(3) शिक्षा का आधार दर्शन है :-

शिक्षा के चार प्रमुख आधार हैं यथा - दार्शनिक आधार, सामाजिक आधार, मनोवैज्ञानिक आधार सामाजिक आधार तथा वैज्ञानिक आधार। दार्शनिक आधार सबसे प्रमुख आधार है इसे ही शिक्षा की नींव मानना चाहिए क्योंकि लक्ष्य निर्धारण का कार्य इसी का है। सामाजिक आधार शिक्षा को समाज से जोड़ने का कार्य करती है। शेष अन्य दो आधार मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक शिक्षा की विधियों एवं पाठ्यक्रमों का निर्धारण करते हैं।

(4) दार्शनिक शिक्षा शिक्षाशास्त्री के रूप में :-

दर्शन के चिंतन का विषय भले यद्यपि अमूर्त होता है, लेकिन समाज से दूर नहीं समाज कल्याण का भाव इसमें निहित है। समाज के लिए कौन से कृत्य अच्छे हैं और कौन से बुरे, नैतिकता, आचरण, रहन सहन सभी के लिए सिद्धान्त रूप में मानकों का निर्माण दर्शन ही करता है। मानव का उत्थान कैसे हो ? यह दर्शन की समस्या है। मनुष्य के विकास का साधन एक शिक्षा भी है।

(5) व्यक्तित्व निर्माण में दोनों का सम्बन्ध :-

व्यक्ति एक चिन्तनशील प्राणी है, वह तर्क करता है, उसमें मौलिकता होती है, कोई भी कार्य वह विवेक से करता है। शक्ति दो प्रकार की होती है - दैवी और आसुरी। शिक्षा का कार्य केवल दैवी शक्ति का प्रकाशन ही नहीं है अपितु आसुरी (पाशविक) शक्ति को मनुष्य से समाप्त कर देना है। यह आसुरी शक्ति तभी समाप्त हो सकती है जब सत्यम् शिवम् और सुन्दरम्

Scanned with CamScanner

का बोध हो। इस बोध को देने में केवल दर्शन ही समर्थ है।

व्यक्तित्व विकास के दो पक्ष माने जाते हैं — आत्मानुभूति और आत्माभिव्यक्ति। आत्मानुभूति विशुद्ध रूप से दार्शनिक पक्ष है। जो सत्य की खोज करता है कि मैं कौन हूँ। दूसरा तत्व आत्माभिव्यक्ति का है, यह व्यक्तित्व विकास का दूसरा चरण है। इसमें शिक्षा, समाज, धर्म तथा मानव जीवन का व्यवहार पक्ष आता है।

(6) मूल्यों के निर्माण में दोनों का सम्बन्ध :-

शिक्षा छात्रों में मूल्यों का विकास करती है। मूल्य विहीन शिक्षा समाज और व्यक्ति को आगे बढ़ा नहीं सकती है। मूल्य कौन से तत्कालीन समाज के लिए उचित है इसका निर्धारण दर्शन से होता है।

(7) दर्शन शिक्षा का मार्गदर्शन करता है —

दर्शन का सबसे बड़ा कार्य शिक्षा को दिशा प्रदान करना है। प्राचीन काल से दर्शन इस कार्य को बहुत अच्छी ढंग से निभाता आ रहा है। यदि देखा जाए तो प्लेटो, रूसो, डीवी हरबर्ट स्पेन्सर, आदि सभी ने अपने दार्शनिक विचारों द्वारा शिक्षा के दिशा निर्देशन का कार्य किया है।

3.4 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

Q1. Define philosophy. Describe the relationship between philosophy and Education.
दर्शन को परिभाषित कीजिए। शिक्षा और दर्शन मे सम्बन्ध का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner